श्री जानकी बल्लभो बिजयते तराम्

श्री गुरु महिमा

जिस को

श्री ६ श्री स्वामी सिरताज श्री महन्तेशशिरोमणि
रसिक-सद-सभा-सरोज-प्रभाकर युगल-किशोर
चित्त-चोर-रहस्य-प्रकाशक श्री स्वामी सद्गुरुं
युगलानन्यशरन महामोदाभरन रचित

तच्चरण सेवी श्री मज्ज्ञानकौवर शरन और श्री मन्म-
हन्त रामोदारशरन जी स्थानाधिपति के लघुभ्राता
भगवान शरन जी ने संग्रह करा के भास्कर प्रेस में
छपवा कर मुद्रित किया।

Printer-R. S. Dublis, Bhaskar Press, Meerut.

तीसरीबार } हक़ तसनीफ़ स्वाधीन रक्खा है { मूल्य प्रति
१००० जिल्द } सन् १९१२ ई० { पुस्तक =)

भूमिका

श्रीमत्स्वामी तरणतारण अधमोद्धारण परात्पर परा प्रेमाभरण निगम नेति रहस्य रस रसिकाधिराज कृपाऽवतार परमोदार श्रीअयोध्या जी लक्ष्मण किला निवासी स्वतंत्र विलासी श्री मद् युगलानन्य शरण महाराज विरचित (श्री जानकी अष्टक, गुरुमहिमा, श्री युगलानन्य अष्टक, तथा द्वितीय अष्टक) विचित्र तर चारु श्री गुरु महिमा नाम ग्रन्थ श्रीमन्महाराज स्वामी जी के चरणकमलसेवी परम कृपापात्र श्री पण्डित राज श्री जानकी वर शरणजी और श्रीमन्महन्त श्रीरामोदार शरण जी स्थानाधिपति के लघु भ्राता भगवानशरण जी ने संग्रह करा कर अवध-वल्लभशरण तत्तोपनाम ब्रजवल्लभ मिश्र एकोन्टैन्ट ने लाला रघुवीरशरण जी दुबलिस के "भास्कर" यंत्रालय में मुद्रित कराई और हक़ तसनीफ़ अपने अधिकार में रक्खा। कोई साहब इसको मेरे बिन पूछे छाप नहीं सक्ता ॥

श्रीगणेशायनम ॥

श्री जानकी बल्लभो विजयते ॥

श्रीजानकीअष्टकारंभ।

ईश ईश नायक पूजित पद पंकज प्रनप परेरी ॥ सकल शिरोमणि शक्ति शान मद मान मलन छबि तेरी ॥ शील सुभाव सरस शोभित शत सुधा स्वाद मुख फेरी॥ युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ १ ॥

श्री मिथिलेश विशेष विभव बर देश सनेह सुतेरी। कौतूहल कल केलि कला कर दम्पति मोद दयेरी। परिकर निकर संग नाना रङ्ग बाल उमंग कियेरी। युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ २ ॥

सुखमा रूप निहारि नयन भरि सासु सात शत घेरी। उरझी ललित लाड़लालित सजि बारि प्राण धन ढेरी। सुन्दर सुवन सनेह सनी सियजू पर प्रीति घनेरी। युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ३ ॥

कनकलता केतकी कंज कलि काहारी हियहेरी। काम कामिनी कला दमक दामिनि भामिनि चय चेरी। रस रूपा प्रेमा प्रधान प्रियप्रीत प्रतीत नयेरी। युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ४ ॥

चितवन चारू चतुर चूरामणि चित वित हरत न देरी। प्रीतम प्राण शुभग संपुट बिच रतन बिचित्र बसेरी। पलक प्रेमपूर म प्रकाश कर कामद कोश लसेरी। युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ५ ॥

धवल धार सरजू सजनी सम सुजस सहस श्रुति टेरी ॥ नवल नाम अभिराम अमल अतुल अनूप गुन वेरी। सम्बल सरस पुष्ट पावन पर धाम छीट छबि तेरी। युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ६ ॥

करुणा कृपा कटाक्ष भई तब कहा करे छल छेरी। अना-

थास परत्यक्ष परावर नृपति प्रकाश सनेरी। हृदै ग्रंथ भेदत छेदत छलछन्द वासना जेरी। युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ७ ॥

अनुदिन उर अनुराग अलौकिक प्रिया चरण निवहेरी। योग यज्ञ व्रत नेम ज्ञान गुन नेह नदी सब हेरी। भुक्ति मुक्ति अभिलाष लाष करि रसिकन सुमति गहेरी। युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ८ ॥

अष्टक अमल सीय स्वामिनी नित चित दै जौन पढ़ेरी। पावै अवशि सनेह प्रिया पद प्रीत प्रतीत बढ़ेरी। दुर्मति दाह दरिद्र दोष दिल दलत दाग भट भेरी। युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥ ९

इति श्रीजानकीअष्टक सम्पूर्ण।

अथश्रीजानकीशतक।

रामारति वर्द्धनी रसेशा राघव प्राण पियारी। रास रङ्ग दरशनी रमन मन रंजनि जनक दुलारी। राग रूप रस जस सुख सदना शशिवदना सुकुमारी। युगलानन्य शरण रमनी रति मान बिमोहन वारी ॥१॥ कोक केलि पंडिता मंडिता कलावती कमनीया। कमल प्रिया कोमला कोक नद सहश सुहग बरनीया। कामा कांत मती कमला कर पूजित पद रमनीया। युगलानन्य शरण संसृति दव दारुण दुःख दमनीया ॥२॥ भव्य भावदा भूरिभलाई बधू रसिक रघुराई। भाल बिभूषण विशद भूषिता निर्दूषिता सदाई। भोग भूति भूतल भव भामिनी पद वंदिता सोहाई। युगलानन्य शरण भजनीया भजन भावना दाई ॥ ३ ॥ चामीकर तन तेज निंदिता चारु चातुरी रचना। चन्दन चांद चांदनी चपला चाह चित्त बिच सचना ॥ चमत्कारिणी चित्त हारिणी चांद चमक चय बचना। युगलानन्य शरण चश्मोंदी ज्यो

ति जग मगति अघना ॥ ४ ॥ सिया सलोनी सहज सोहावनि सारङ्ग नयनी बामा । शरण पालनी शुभगुण खानी कमला केलि ललामा । समीचीन सज्जन मन रंजनि सरल सुभाव सुधामा । युगलानन्य स्वामिनी सब की श्रीसीत नवा बामा ॥५॥ मिथिला मोदकरी मिथिलापति नन्दनि नवला नारी । गिरिजा पूजन तत्पर पति पद प्रेम परा छविधारी। रघुनन्दन कल क्रोड बिलासिनि सुख रासिनि उजियारी। युगलानन्य सुनैना रानी सुता सनेह संवारी ॥ ६ ॥ श्री दशस्यंदनभूप पतोहू परम माधुरी सरिता ॥ सोमवंश जीवनी जानकी जगबंदिता सुचरिता ॥ कौतुक सदन शोभिता तरुनी नित्या गुन गन भरिता ॥ युगलानन्य शरन संपति सद दानी फलन सुफरिता ॥७॥ दृगजा कूल कलोलनि रसिका कनक भवन सल भ्राजी। नव नागरि गुन आगरि प्रीतम प्राण प्रिया सुख साजी॥ श्रुतिकीरति उरमिला मांडवी मधुर हांस लखि राजी। युगलानन्य शरन सुन्दर लावण्य लता रस राजी। ८। मंदस्मिता मनोज माननी मान प्रहार प्रवीना।प्रेम मधुर आसन आसीना छविनिधि पय प्रिय मीना। माननीय मानस मरालिका कलित कंज कर बीना ॥ युगलानन्य शरन सुकामदा कादंबिनी नबीना ॥ ९ ॥ श्री प्रमोद वन कुंज विहारिनि रसिक विहारी संगिनि ॥ झूलन गींत परापनि निज गुढ़ सखिन प्रदायनि रंगिनि ॥ लज्जावती रसीली ललना अद्भुत नेह तरंगिनि ।। युगलानन्य शरण सीमा सौभाग्य सदैव उमंगिनि ॥ १० ॥ श्री सीता शतनाम सुधाहृद मंझ सुमज्जत जोई ॥ ताको पाप ताप तम कोटिन कलप बिनासन होई ॥ और कौन फल अधिक कहौं सुनि सुख सरसो सब कोई ॥युगलानन्य रसिक रघुवर बस होत बात नहिं गोई ॥ ११ ॥

इति श्री जानकीशतकं

सम्पूर्णम् ॥

श्रीगणेशाय नमः

॥ अथ गुरुमहिमा प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

बन्दौं श्री श्री रसिक गुरु गुननिधि अगुन अधार ॥ जासु शरन शीतल करन हरन मोह मद मार ॥ १ ॥ कुश सुत सरस सुवास कल कोमल अमल निवास ॥ जग जस जीवन जान प्रद असद दमन मुद रास ॥ २ ॥ सिय वल्लभ से सहस गुन करुणा करनत पाल ॥ श्रुति सत गुरु पद परम निधि सब बिधि प्रान अधार ॥ युगलानन्य शरन नमत रोम रोम बहु बार ॥ ४ ॥ उर उत्कंठा होत अति गावौं गुरु गुन गीत ॥ पै विशेष मैं मंद मति किमि कहौं रहस पुनीत ॥ ५ ॥ केवल करुणा कौश की कृपा विवस बुधबाल ॥ बरणत श्री पन प्रेम प्रिय बरधन चरित रसाल ॥ ६ ॥ महा मोह मंगल मधुर मन मोहन नृपलाल ॥ श्री गुरु चरन सरोज भजि हिय बिलसत तत्काल ॥ ७ ॥

॥ सोरठा ॥

सर्वोपरि सिरताज श्री सत गुरु आनंद घन ।
सेवो तजि जग लाज पावो प्रीत प्रतीत धन ॥ ८ ॥
श्री सत गुरु पद चाह करत रहत नहिं नेक तम ।
बढ़त नेह सिय नाह होत न कौनिउं भांति कम ॥ ९ ॥

॥ बरवा ॥

भजु श्री गुरु सुखसागर तजि अभिमान ।
सजु निज रस नव नागर अमित विधान ॥ १० ॥
इत उत नाहक दौरो विगत विचार ।
भजत न जन कस गुरु पद भाव भंडार ॥ ११ ॥

॥ चौपाई ॥

श्री सत गुरु सुख सागर ध्याना । करो भरो मुद मोद प्रधाना
महा मधुर मूरति मनमोहन । श्री सत गुरु नख सिख सुचि सोहन
अंग अंग अनुपम छवि झलके । धिय ध्यावत बरबस दृग छलके
दिव्य भव्य सौंदर्य सुधाकर । सुमिरत शतत सवाद सुधाकर
श्री सद्‌गुरु विज्ञान विलासी । अति अनवाधि अनुराग निवासी
नख मनि प्रभातो मत मद हरनी । निर्विकार निर्मल दुति धरनी
बारेक ध्यान धरत मन माहीं । ललित लाल लीला झलकाहीं
लोचन लाह लह्यौ भलभांती । जाके जिय जग मग छवि पांती
ज्ञान विराग निखिल श्रुति साधन । भजन भावना इष्ट अराधन
जिनके श्री सत गुरु पद प्यारा । तिनकर कंज सुगत सुख सारा

श्रीगुरू सन्मुख होत ही उपजत प्रेम प्रबोध ।
मिटत मोहमाया मदन मान बिकार विरोध १ ॥
अनायास अविचल रहस तहस नहस से पार ।
उदित होत रवि जोत ते अति दुति मान उदार २ ॥

श्रीसतगुरु करुणा कर कामद । द्रवहिं जीव जन पर निज नामद
ताकों तिहूं काल तम नाहीं । पल प्रति परम प्रभा झलकाही
सतगुरु सकल ईशपति ईशा । सतगुरु सुधा सार प्रदसीसा ॥
निर्विकार सतगुरु सुखरासी । हेरत सुहग छुडावत फांसी ॥
श्रीगुरु नामनिरंतर लीजै । श्रीसतगुरु पादोदक पीजै ॥
श्रीसतगुरु वर वदन उगालन । पावत परम प्रेम मुद लालन ॥
श्रीसतगुरु झांकी झुकिझांके । खलक खराब खाक नहीं फांके
श्रीसतगुरु झूंठन हितनरसे । तेहि तन रोम रोम रस बरसे ॥
दृढ विश्वास सजाय सदाई । श्रीसतगुरु पद लगन लगाई ॥
लोक वेद बंधन नहीं राखे । रसना श्रीगुन निधि गुन भाषे ॥

श्रीसतगुरु गुन गहर गंभीरा । गावत दूर दाह दल पीरा ॥
अपर उपाय बिहाय विशेषी । श्रीसतगुरु सुमिरो सम शेषी ॥
श्रीसतगुरु मृदु मंजुल वानी । महा मंत्र मानो सुख खानी ॥
श्रीगुरु मंत्र स्वतंत्र शिरोमनि । जपो जीह जाहिर जालिम हनि
श्रीसतगुरु पादुका प्रछालन । पीवो प्राण सदृश प्रतिपालन ॥
जो सुख नेति अगम श्रुति गावै । सो सदशर्म सुगुरु मुख पावै
सद्गुरु पद पंकज बलिहारी । पलपल प्रति प्रणतारतहारी ॥
चिंतामणि सुर धेनु समाना । श्रीसतगुरु किमि करों बखाना
प्राकृत परम दिव्यतम भेदा । गुण अंतर समझहु तम खेदा ॥

दोहा—श्रीगुरू समता कहत ही उदित होत अघ पुंज ।
तातें उपमा योग नहिं श्री गुरू नेह निकुंज १ ॥
माता पिता अमित जग नाता स्वारथ साथ ।
केवल परमारथ मयी सकल भांति गुरू गाथ २ ॥

सोरठा—श्री गुरू कृपा निधान तारकेश दायक रहस ।
भजु तजु सकल गुमान प्रान नाथ सुंदर सरस ३ ॥

बरवा—श्रीगुरू पद पर वारों जगत जहान ।
अनायास निस्तारों प्रीतम प्रान ४ ॥

श्रीगुरुमहिमा अकथ अडोला । को कबि कहै लहै गुन मोला
निराकार आकार स्वरूपा । वेद भेद गत खेद निरूपा ॥
धरम ध्यान धारणा अनेका । श्री सतगुरु परसि बिवेका ॥
जेती मति गति रति जग जानो । तेतो श्रीगुरु तंत्र पिछानो
अपर वासना धूरि मिलावो । श्रीगुरु बचन पियूष पिलावो ॥
तारन तरन कषाय बिमोचन । निरखौ नैन छोड़ा सब सोचन
अरे अभागी जीव अनारी । क्यों न भजे सतगुरु सुखकारी ॥

जिनके बस संतत शुभ सरबस। सेवत पुनि न होत नर परबस॥
धन्य धन्य सोई सब भांती। जेहि जिय जीति जगी नख कांती
सदगुरु शब्द सोहावन सांचो। सुमिरत कालव्याल से बांचो
सतगुरु सिरजन हार जहाना। बरनै बेद बिज्ञ बिधि नाना
तमतारक बारकभय भावी। समसारक प्रदरंग सहावी॥

दोहा—सावधान सुमिरन सजो श्री सतगुरू पद कंज।
युगलानन्य शरण अबश मिटे मानसी रंज॥ १

सोरठा—है अति सुगम उपाव भव निधि उतरन पार को।
श्री गुरु सुपद सुनाव सब विधि कुशल बहार की॥ २

बरवा—श्री रघुवर वर बानी विमल बिचारू।
युगलानन्य परम गुरू रूचि अब धारू॥ ३

चौपाई

श्री सतगुरु गुन गनत रहीजै। पद पाथोज बिलोकत जीजै॥
नाम निशान प्रधान प्रदायक। परमानंद विधान विधायक॥
वै धारागातुगा अनूपा। आवत उर अंतर रस भूपा॥
ऐसे कौन अनूप पदारथ जौन जलधि पावै न यथारथ॥
अगुन सगुन श्री सतगुरु जानो। सुगम अगम अंतर अनुमानो॥
श्री सतगुरु सम स्वारथ हीना। वेद पुरान प्रमान सुनीना॥
दोनों दीन सोधि सब देख्यो। श्री सतगुरु महिमा गरु पेख्यो॥
बार बार नित पर धिरकारा। जो न सजे सतगुरु पद प्यारा॥
जाल ज्वाल तासु नहीं छूटत। गुरु सुमिरन तागा जेही टूटत
काहू समय न सो सुख पावै। जो जड़ गुरु माधि औगुन लावे॥
श्री सतगुरु द्युति दिव्य गुनाकर। तिमिरि तनक किमी जहां प्रभाकर

श्री सतगुरु निन्दा शठ सुनि हैं। निज मुख कहत सीस नित धुनि हैं
सहस कोटि कल्पन लगि पापी। सहै त्रास अंतक पुर तापी॥
चौरासी यौनिन में भरमै। बारबार संकट सहि सरमै॥
श्री सद्गुरु निंदक ढिग बैठे। बैतरनी सरिता सो पैठे॥
ताको भलो लोक तिहुं नहिं। जाके श्रीगुरु पद रुचि नाहीं॥
श्री गुनेश गुरु ज्ञान निधाना। सेवन हीन दीन पशु स्वाना
श्री सतगुरु समीप बहु बोले। सो बुधि वाला कुमग माधि डोले॥
तिन को तनिक नहीं कहुं आदर। नीरस नीर रहित ज्यों बादर॥
श्री गुरु हित वित खरचत लाजे। सो शठ सहस सांप तन साजे
महा मूढ़ गुन गूढ़ न जाने। दुख प्रद धन सुख सदन सुमाने
जो श्रीगुरु सिय बरहित लागे। तौ शक रहित देत अनुरागे
नाहित नरकरूप बित सांचो। समुझि सुहृद सपनेहुं मतराचो
तीय तनय तनया हित खरचे। श्रीसतगुरु वचनन ते अरचे॥
मोह मलीन लीन गृह कूपा। ते शठ क्यों समुझै गुरु रूपा॥
कोटिन कलप रंकना ताको। जाको चित्त गुरु हित नहिं छाको
जगत पदारथ नित्य न कोई। अन्तकाल पंछतावा होई॥
तातें सदा होउ हुशियारा। श्रीगुरु भजो तजो भव भारा॥

दोहा—निजानन्द अद्वैत पद ध्येय बिष्णु शिव शेष।
सो सर्वोपर प्रेम निधि देत सुगुरू अनिसेष॥

चौपाई

निरमल नैन नलिन नव नागर। श्री सत गुरु आधीन उजागर।
श्री रसिकेशं सुगुरु प्रभुताई। सहस शेष शिव सकहिं न गाई।
जगत जीव मोसे अघराशी। किमि वाक़िफ़ गुरु चरित प्रभाशी॥
लौकिक नरन सुप्रीति करावैं। सर्वोपरि श्री गुरु बिसरावैं॥
रौरवादि नरकन के माहीं। भ्रमत रहैं छाया कहुं नाहीं॥

जे श्री सतगुरु वचन न माने । तिनके अघ अनेक दुख खानें
जान प्रमाद विवश अज्ञानी । सङ्ग करें अनहित हित मानी
सोऊ अधम प्रलापक पाजी । पावैं प्रबल कष्टु गन गाजा
कटु कठोर बानी गुरु आगे । बदैं बदन सो परम अभागे
अशनी सहस निपात अनेकन । घोर शोर सो सुने अछेकन
ताते सावधान हुइ प्यारे । श्री सतगुरु वर बाग बिचारे
श्री सतगुरु आवत जब देखे । आदर सहित उठे अनिमेषे
आलस अथवा मान समेतहिं । बैठे निरखि नैन गुन केतहिं
थावरादि योनिन को भोगे । लहे हमेश हाय शत शोगे
सतगुरु निकट न हांसी ठाने । रुचि अनुकूल क्रिया शुभ्रमाने
सतगुरु सरस सुधा सुखसागर । परिपूरण रस एक उजागर
तेहिमधि मज्जन जे जन करिहैं । अमिततांप तेहि छनपरिहरिहैं
तीरथ तप जप जोग विरागा । साधन सकल समेत सुरागा
श्री सतगुरु पद पंकज बसही । कृपा प्रसाद पाय पटु लसही
वृथा बिबिधबानीपढ़ि उरझै । श्री गुरु कृपा विमुख नहिं सुरझै
ढीठ बलकही सदा बिसारे । होय आधीन सुचरण निहारे
अदब समेत हमेश रहावे । अधिक विनीत भये सरमावे
जिमि जनरंक भूप भय राखे । सुरूप बिलोकि मधुर कटु भाषे
तिमि सतगुरुसमीपनितरहिये । पाय निदेश बचन लघु कहिये
यद्यपि शिष्य बिज्ञ गुनराशी । तऊ गुरु निकट होय पद दासी
अति कुलीन तऊ नीच सुमाने । श्री सतगुरु परमोत्तम जाने
श्री करुणामय गुरु सम दूजो । मत मानो सपने नहिं पूजो
सब पूजन गुरु अर्चन कीने । मनत पुरान व्यास मन दीने
संत गुन, सम्बन्धिन सननेहा । सजी सदैव सौंप धन गेहा
श्री गुरु निकट स्वान सममाने । प्रभु प्रसन्नता हेत प्रमाने
गुरु भ्राता गुरुपद अनुरागी । मानै तिन्हैं बिपुल बड़ भागी

आवत तिहूं लोक के माहीं। वेद पुराण प्रमाण बताहीं
गुप्त प्रगट सबही सुख आगे। दरस परस सद पद अनुरागे
ऐसो गुरु मुख रहस सम्हारे। श्री गुरु पद सुमिरन मन धारे

ताकी जीत जहान जुग युग युगांत लो मीत
मन वच वपु जाके भई श्री सत गुरु पद प्रीत ॥ १ ॥
सतगुरु बिन तारक अपर कहौ कौन जग बीच
भवनिधि ते काढ़े कृपा-सिंधु हरै पद मीच ॥ २ ॥

सोरठा- श्री गुरु करुणा छांह सदा चाहिये सीस पर।
वारौं अमितहु माह बार बार जगदीश पर ॥३॥

बरवा= रे मन मेरो मद पी अंध अचेत।
भजत न निशि दिन श्री गुरु कृपा निकेत ॥४॥
श्री गुरुसम सुख दायक लायक सेव ।
कहौ कौन जगतीतल लहि गुन भेव ॥५॥

चौपाई

जो कछु करम करे सो सबही। श्री सतगुरुहिं निवेदे तबही
सतगुरु कृपा निधान दयाला। शमन करैं शत संकट साला
सतगुरु रहस रसाल अनूपा। धारैं हृदय सदै गत धूपा
श्री सतगुरु प्रसाद कन पावै। अमित महा मख फल प्रगटावै
श्री गुरु मधि मानुष मति भूली। जनि कीजे काहू विधि फूली
अगणित पुण्य पाप छयकारन। प्रीत प्रतीत प्रत्यक्ष निवारन
सियवल्लभ से गुने बिशेषा। काहू भांति रचे नहिं द्वेषा
सतगुरु मया महा मधुराई। लहै ललित लालन रसिकाई
प्रीतम अनायास आधीना। जो सत गुरु सेवन लौ लीना
सतगुरु मेहर होय हिय होशा। अचल लोकहितअनुपमतोशा
सतगुरु दया दरद दुख दूरा। अनायास झलके निज नूरा
सत गुरु दया अनाहत बाजे। सतगुरु दया दरस रस राजे
सतगुरु बिन करनी कुल थोथी। होत न बोध पढ़े बिन पोथी

सतगुरु दया सकल श्रुति अर्था । भासत हिय अंतर हरि व्यर्था
ज्यौंनभ कुसुम नीर रवि कीरन । त्यों सतगुरु विन बोध समीरन

दोहा– श्री सदगुरु करुणेश, कल कृपा प्रसाद प्रताप ।
परम परेश प्रकाश पद, पावहिं सुमन अताप ॥

सोरठा– श्री सतगुरु बलिजाउ, बार बार मन मुदित ह्वै ।
इत उत कतहुं न धाउ, लहो लाह रस सुधित ह्वै ॥

बरवा– बिरहिन तलफत पल पल कलप समान ।
श्री सतगुरु पन पालत कृपा निधान
को सतगुरु बिनु राखे बिरहिन प्रान ।
युगलानन्य बिचारिये सुगुन महान ॥

चौपाई

अगम रहसासयलाल सोहावन । सतगुरु कृपा लहें जनपावन
सतगुरु दया कमल विकसावै । सुमन सुगंध सरस सरसावै
सतगुरु प्रभा जौन दिनझलके । तीन दिवस दुति लालन ललके
सब साधन कृत आस बिहाई । सतगुरु पद भरोस लय लाई
जब चाहे तब श्री गुरु तारें । युगलानन्य शरन अब धारें
श्री गुरु पद अभिमान करावै । सो तम रहित रहस्य भरावै
हौं सब पतितन को सिरमौरा । ज्ञानविहीन दीन मति बौरा
केवल कृपा कोष पद आशा । अपर उपाय विशेष निरासा
दंभ खंभ दिल गड्यो हमारे । कृपा रावरी ताहि उखारे
श्रीबरवचन हिये रुचि करिहौ । श्रमबिरहितभवनिधिसोतरिहौ
कठिनकालकलिकलुषकराला । सत गुरू राखन हार दयाला
रे चित चपल न इतउत जावो । श्री गुरु बचन प्रतीत रचावो
अहो भाग लहि मानुष देही । ताहू पर गुरू सहज सनेही
ऐसो समय पाय जनि चूको । सब लौकिक स्वारथ पर थूको
सतगुरू भंजो तजो कुटिलाई । कहर कदंब लहर मिट जाई
आपा मेटि शरण गुरू लेहू । कपट कूरताई तजि देहू

श्री सद्गुरु आचरण अगाधा । निरख मोद मानो तजि बाधा
सकल भाव श्रीगुरू मधिमानो । संत संग अंतर रच छानो
सीताराम रूप गुरू प्यारे । परम धाम अनुराग संवारे
अनुचितउचितबचनगुरूधारो । परम उचित सद रीत विचारो
सदा दयाल देव गुरू स्वामी । अनुचितकिमिकहिहैंसुखधामी
दृढ़ विश्वास सुगुरु बर बचना । छाँडि दीजिये चितकूलरचना
श्री सतगुरु सन्मुख सुख सरसे । परम प्रधान प्रेमपद सरसे
सतगुरु प्रीति निरंतर जाके । तीनहुं काल घाट नाहिं ताके
सतगुरु सुधा बचन जो पीवै । युग अनन्य सो युग युग जीवै
सतगुरु कथित ज्ञान जो धारे । अनायास सो भवनिधि पारे
जिनको सतगुरु मिष्ट लगाने । सो सब विश्व विषय बिलगाने
धरनी धरम धाम गुरु माने । सो सन्मुख सरसब्ज़ सयाने
सतगुरु रहित तुच्छ दृग देखे । श्री गुरु सहित सफल सब पेखे
ज्ञान ध्यान कुल गुरु रजमाहीं । समुझै सदा शोक सरसाहीं
बड़भागी अनुरागी सोई । जेहि सतगुरु पद प्रीत परोई
तेहि पर बार बार है लानत । जो श्री गुरु निदेशनहि पालत
मनमुख भरे जिये बहुबारा । भुगते जोनि अनेक प्रकारा
मनमुख की गति होयन कबहूं । चाहे श्रम साधे पचि सबहूं
मनमुख मुख देखत, बड़पापा । उपजत सहस भांति संतापा
मनमुख महा मलीन सदाई । मनमुख की गति दुर्लभ भाई
मनमुखअखिल दुष्टसिरताजा । मनमुख सब पापिनकोराजा
मनमुख महामंद मति मानो । मनमुख संग न सपनेहु ठानो
मनमुख ताहि समुझिये भाई । जेहि श्री सद्गुरु बचन न भाई
मनमुख ही को निगुरा जानो । मरम निहारि न भेद बखानो
गुरु बिन किये ठौरहू पावै । गुरु प्रतिकूल व्यथा बहुछावै
श्री सतगुरु अनुकूल हमेशा । रहो चहो आनन्द सुदेशा
गुरु बिन किये अपूत रहावै । कर्म धर्म सब वृथा बहावै

श्री गुरु रहित कौन प्रतिपाले। नाना भांति सहे श्रम साले
सकल एव शकट के माहीं। है या मधि रंचक शक नाहीं
महा मद्यपी ज्वारी लम्पट। हिंसक कूल निंदक तिमि कंपट
श्री सतगुरु औसर सुठि एही। बहुरि कहां चौपद गुन गेही
अते अवशि कीजिये सतगुर। अनायास ही पहुंचोगे धुर
श्री गुरु प्रथम कीजिये जानी। जामें होय अन्त ना हानी
सेवो सदा समीप रहावो। श्री सतगुरु आयु सहिग हावो
श्री गुरु निकट झूठ नहिं बोलो। ज्योंकी त्यों अंतर की खोलो
कपट निपट त्यागो गुरु आगे। निशदिन रहो सुपद अनुरागे
तरे सहस पीढी अनयासा। जेहिछिन गुरुपदरज विश्वासा
विधि निषेध लागे नहिंताही। दृढ़ प्रतीत जेहि गुरु रजमाहीं
श्रीसतगुरु रज भाल लगावो। परा भक्ति विज्ञान जगावो
जनि मातो इत उत भ्रम ताही। सतगुर भजो तजो दुचिताही
रतीमात्र श्रीगुरु अरपे धन। श्रद्धा सरस समेत मोद घन
ताकी मिति कैसेहु कहुं नाहीं। तऊ अरुचि उर अवशि नसाहीं
दाम देत शंका तिल राखे। सो केहि बिधि प्रीतम रस चाखे
श्रीगुरु परिपूरन सुख रासी। करुणा कर छुडवावत फांसी
एतेहु पर नहिं समुझत जे नर। जानों तिन्हें सदा खर बरतर
श्रीसतगुरु पर तन मन वारैं। युगलानन्य शरन तम टारै
सतगुरु कृपा जौन विधि पैये। सब विधि सो सुचि कृत्य कमैये
रहे अचिंत्य भरोसे गुरु के। पावै परम मोद बिनु जुरके
निरखे नैनन नवल नित मूरति। श्री गुरु सुन्दर सुचि सूरति

दोहा- नकल असल होजात द्रुत, श्रीसतगुरुपद ध्याय
युगलानन्यशरन लखो, बहु यत्न विषम विहाय ॥१॥

सोरठा- छुपी न गुरु गुन गाय, श्रीरघुनाथ दशमुख कही
गहे जौन जन हाय, फेर न वाकी बृति क्षही ॥२॥

है नहिं अचरज बात, श्री गुरू देव परत्व पर ।
जेहि हिय नित कुशलात बाँह गही जेहि परमगुर ॥३॥

बरवा- अजब अनूठी रस निधि अद्भुत गैल ।
श्रीगुरु मेहर करावत तेहि थल सैल ॥४॥
श्री गुनेश गुरू बच बर गौहर अमोल ॥
युगलानन्यशरन हिय धरत अडोल ॥ ५ ॥

चौपाई

श्रीगुरु बचन सहज सुख दायक । मंत्र महा लिधि गुने अमायक
श्री सतगुरु निज मंत्र अनूपा । सात बरन श्रुति सन्त निरूपा
जपे सनेह समेत सुभागी । अवस होंहिं सिय पिय अनुरागी
वे परवाह हमेश रहावै । गुरु गुन सुनत जहान बहावै
राजा रंक सङ्क सब त्यागे । देवी देव मांझ नहिं लागे
सब अवतार उपासक जाने । श्री सतगुरु उपास्य अनुमाने
गोप नेकु वर बात न धारे । सद्गुरु महिमो विदित बिचारे
चित चंचल गुरुपद थिर कीजे । योग ज्ञान रति फुफल फलीजे
निज मनके अनुसार सुमारग । चले विहाय कुमन गतिपारग
प्राकृतमन संयोग न सोहत । गुरु मुख निजमन गहे अमोहत
इष्ट अनिष्ट निवारन हारे । श्रीगुरु देव कृपाल सम्हारे
श्रीसत गुरु प्रियप्रान समाना । समझे सो सुगुरो बुधिमाना
शिष्य सकल लक्षन सद भाषे । हिय अंतर धारत रस चाषे
श्रीगुरुगुनकछु बरनिसुनावो । सुनि गुनि पुनि २ प्रेम समावो
सुगुरन को गुरुगन सुख दाई । निगुरुन की मति मोद न पाई
परमकृपाल शाल श्रम भंजन । विषद बोध बरधन जनरंजन
निजानंद मदमस्त एक रस । नितनिर्लेप रहस प्रेमिन बस
परम परेश रमावन वारे । सब मत तुच्छ जानि श्रमटारे
हर सायत सियराम रसाले । चरित कहे निज जनप्रतिपाले
कटुलाई मनबच वपु नाहीं । महा मधुर वानी गुनग्राही

प्रबल विराग अदाग सजाये। प्रेमा परा भक्ति छवि छाये
त्रिगुन कल्पना रहितसुयोगी। सिय वल्लभ बिहाररस भोगी
लोककदंबनिखिलअभिलाषा। सपनेहूं नहिं बहुमत साषा

दोहा—अमर भूमि रुह सहस सम अभिमत फल दातार।
श्री सतगुर आरत हरन दायक दिव्य दिदार ॥१॥
अति अनुराग रहस्य शुचि सिंधु सुशील सुभाव।
परमारथ पद प्रभासद सदन देखावन नांव २॥

सोरठा—युगल किशोर रहस्य निशि वासर नैन झलक।
सतगुरु चिन्ह अवश्य सियपिय विन न छिन पलक ॥३॥

बरवा—छिन छिन छवि छकि छाको गुरू पद ध्याय।
युगलानन्य विवाको विषय बिहाय ॥४॥

चौपाई

अतिअनन्यरतिरहस सुवासा। सियपियविनविषविविधउपासा
ज्ञान ध्यान भावना रंगीली। अंग अंग रस एक रसीली
श्रीगुरुगुनकिमिवरनो वानी। निगमागम नित नेतिवखानी
श्री सदगुरु गुन अगुननिहारो। प्राकृत भाव नेकु ना धारो
जेते गुन श्रुतिसज्जन गावै। तेते श्री गुरु मधि सरसावै
श्रीगुरुकृपाकटाक्ष प्रभावा। लघुजन लहे ललितछवि दावा
रसिकसुगुरुमधिसबगुनदरसत। विना प्रतीत प्रीतनहिंपरसत
जिनके जुगल रूप गुन नामा। ते सांचे सदगुरु अभिरामा
सीताराम रहित जे धर्मा। माने तिन्हें समान अधर्मा
श्री सतगुरु गुन गावत रहिये। इत उत की चरचा नहिं चहिये

दोहा—श्री सतगुरु महिमा अकथ शेष न पावत पार।
गिरा गिरापति गौरि पति गुरु गनेश गतिहार ॥
अपर अनंत कवीश जे मुनिवर परम प्रबीन।
कहिं न सकहिं सतगुरू अमल महिमा वेद बिहीन ॥
मेरी मतिगति अति अलप जलप योग किमि सोय।
तदपि शिरोमणि गुरूकृपा बरनी कुछ शुभबोय ॥

चौपाई

सतगुरुमहिमा मोदप्रदायक । पढ़त सुनत रीझत रघुनायक
जावत तप तीरथ फल गाये । और अनंत सुकृत श्रुति छाये
सो समूह फल रती समाना । श्रीगुरु महिमा निकट प्रमाना
नाम मंत्र अनयास प्रकासे । ज्यों का त्यों अंतर उर भासे
श्री सतगुरु सनेह हिय होवे । अखिलअमंगल कलिमल धोवे
गुरूमुख श्रीसतगुरगुन भाषे । मनमुखविमुख श्रवनसुनिनाषे
श्रीसतगुरु कृपालपद भजिये । नानापंथ बासना तजिये

दोहा—जै जै जै श्री सद गुरू सब बिधि मम सिरताज ।
युगलानन्य सहाय जय करुनानिधि महाराज ॥१॥
बरन्यो श्री सरजू सुतट श्री गुरु चारु चरित्र ।
बारकरसना जाप युत जन सब भांति पवित्र ॥२॥
श्री सदगुरु प्रेमास्पद चित्त कीजिये मोर ।
नाम रूप लय लगि रहे जहे जहान झकोर ॥३॥
युगलानन्य शरन सदा याचत बारम्बार ॥
निजपद सदरत दीजिये नाम रमम एक तार ॥ ४ ॥

इति श्री श्री ६ श्री स्वामी महाराज सतगुरु सिरताज श्री २ जीवाराम महा मोदधाम लघु किंकरानुकिंकर युगलानन्य शरनबिरचित श्रीगुरु महिमा समाप्तम् ॥

॥ अथ युगलानन्य अष्टक ॥

प्रारभ्यते

कवित्त

भावन सों छानी छमा छोरलों समानी भ्रमताप नहिं मानी परमानंद की दानी है। ठानी महिमानी मनमानी प्रिय प्राणिन की ज्ञानिनप्रमानी प्रीतिनीति की निशानी है। सकै को बखानी बानी युगलअनन्य जूकी रामरस सानी चारु चोजन की खानी है। शारदा चुपानी सुधा माधुरी छिपानी परवानी शरमानी सवैमानी महरानी है ॥ १ ॥ सीताराम नाम सुधा सिंधु में समाने रहें माया मान माने गहे बाने मोद जन्य हैं। शीलताई साधुताई सरल सनेहताई शुद्ध बुद्धताई पंडिताई के अरन्य हैं। मोह दल गंजन को दीन जन रंजन को भारी भीति भंजनको संबली शरन्यहैं। रसिक अनन्यन में संत अग्र गन्यन में धन्यनमें धन्य गन्य युगलअनन्य हैं ॥ २ ॥

रोम रोम सीय राम नाम लै अराम लहैं लोचन बिराम गौर श्याम सो अनन्य हैं। योग जप संजम समाधि नेम ज्ञान ध्यान पूजन विधान में सुजान अग्र गन्य हैं ॥ सुखद महान् दयाशील के निधान सबै प्रेमिन के प्रान वे प्रमान मोद जन्य हैं। घोर भाव धार ताको तारक उदार राम रंगवे शुमार छके युगल अनन्य हैं ॥३॥ पंडित महान् महा ज्ञान प्रेम के निधान ज्ञान मान दया मान बुद्धि मान लेख में। भगति भंडार भले भावनि को पारा वार दीनन के अधार सुउदार अव रेखे में ॥ रागवन्त रूपवन्त सरल स्वभाववन्त शीलवन्त सत्यवन्त सन्त बहु पेखे में ॥ परम अनन्य रामधरम धुरीनधन्य युगल अनन्य से न अन्य सुने देखे में ॥ ४ ॥ काहे को कलेश देत देह को वे हेत मूढ़ योग तप त्याग नेम व्रतहिं विहावरे। तीरथ पयान वे ठिकान क्यों भुलाने फिरै

दान के बिधान हूं न जान को जुड़ावरे ॥ योग जप संजम समाधि में उपाधि महाभानि मत मेरो सब साधन बहावरे । श्री युगल अनन्य जू की शरण सिधारि चारु वेगि वे शुमार भव धार पार पावरे ॥ ५॥ कठिन कराल कलिकाल में बेहाल जीव हेरि है दयाल मोह जाल मेटि डारी है । सीता राम नाम रूप धाम गुन गाय भलो भाय सरसाय सुख छाय दियो भारी है । त्याग औ बिराग अनुराग राग रंग लाग सुगुन सुभाग की अदाग उजियारी है । रसिक अनन्य जग जाहिर न ऐसो अन्य युगल अनन्य धन्य महिमा तिहारी है ॥६॥ दूतन बुलाय के रिसाय धर्मराय कह्यौ गयो गफिलाय काहे पातकी न लावते । कीजे कहा नाथ उहां युगल अनन्य सबै जीवन शरन्य पुराय मारग चलावते ॥ राम नाम रूप धाम लीला गुन आठौ याम खलक तमाम यही काम में लगावते ॥ खोरि २ ग्राम २ धाम २ राम राम कौन हू कलाम विना राम नहिं पावते ॥७॥ शेष बहु वदन गनेश गज बदन महेश पंच बदन न वेष योग जन्य हैं । अज मुख चारि चतुरानन प्रपंच कारि सनक सुचारि ध्यान धारि अग्र गन्य हैं ॥ अपर महानु भक्ति ज्ञान के निधान तेऊ ना फबै समान जे जहान महा मन्य हैं ॥ सगुन सुजान सबै भांतिन सुधन्य सुखी युगल अनन्य जू से युगल अनन्य हैं ॥ ८॥ आनन ,अनेक एक एक प्रान धारिन के एक एक आनन में जीभ कोटि सरसाय । एक एक जीभन पै कोटि रूप धारण कै आनन हजारन कै बैठे सारदा सुभाय । सुनिये कृपानिधान युगल अयन्य भान कोटिन युगान करे गान आन बिसराय ॥ रावरी रसज्ञ ताई विज्ञता विवेकताई विद्या बुद्धि शीलताई शुद्धता न गथ्य जाय ॥ ९ ॥

दोहा—अष्टक युगल अनन्य को, परम सुमंगल रूप ।
पढ़ै सुनै तेहि चित चढ़ै, युगल अनन्य अनूप ॥

अथ द्वितीय अष्टक ।

हरिगीत का छन्द

अति सुखद रूप अनूप मुनि वर भूपवत राजत सदा । रतिनाथ जित नित मद रहित चित सकलहित कारक सदा ॥ भव भरम नाशन अडिग आसन भक्ति शासन दिन मणी । पद युगल युगलानन्य शरण नमामि स्वामि शिरोमणी ॥ १ ॥ परबत शिलावत द्रव्य जाको नागिनी सी नारि है । शतमुख चतुर्मुख लोक सम्पति डाकिनी सी विचारि है ॥ सब सिद्धि ठगिनी सी गिनत विष सम जगत माया बनी । पद युगल युगलानन्य शरण नमामि स्वामि शिरोमनी ॥ २ ॥ अक्षोभ लोभ बिहीन हरि पद लीन नित्य अदीन हैं । पर दीन जन के दुःख हारक अरि बिदारक पीन हैं ॥ सत संग माहि प्रवीन युक्ति नवीन कहहिं अति ही घनी । पद युगल युगलानन्य शरन नमामि स्वामि शिरोमनी ॥ ३ ॥ मन शांत इन्द्रीजीत आप अभीत नीति नहीं तजै ॥ सब संत माहिं सुविदित जन पर प्रीति रीति सदा भजैं ॥ अवि पक्ष दक्ष सुलक्ष जो प्रत्यक्ष दिन अरु जामनी । पद युगल युगलानन्य शरन नमामि स्वामि शिरोमनी ॥ ४ ॥ भव पूर जल निधि भूरि ते काढ़त निकट निज दूर हैं । तम पुंज नाशन सूरवत सब विश्व में भर पूर हैं ॥ यह हैं वशिष्ठ मुनी कि धौं अवतार और लियो पुनी । पद युगल युगलानन्य शरन नमामि स्वामि शिरोमनी ॥ ५ ॥ यह काल अति विकराल लखि यम जाल तें जो छुड़ावने । प्रतिपाल ने यह तन धरयौ कि धौं धरयौ सुभक्त उधारने । जो तेजमान पुमान सो भी अंश हरि को कहि गुनी । पद युगल युगलानन्य शरन नमामि स्वामि नी ॥ ६ ॥ अभिमान मान न जानहीं जेहि कीर्त्ति लोक बखान६

नाथ साथ अनन्य भाव अखंड मन में आनहीं । उपमेय ऋषिगण पूर्व से उपमान मानत अब जनी । पद युगल युगलानन्य शरन नमामि स्वामि शिरोमनी ॥ ७ ॥ केते कहौं मुख एक ते गुन बहुत अवगुन नाहिं है । दर्शन करत अघ हरत दुरित निज धर्म मय तन जाहि हैं ॥ नित ध्यान तिनको धरौं हित सों करों सुस्तव मुखभनी । पद युगल युगलानन्य शरन नमामि स्वामि शिरोमनी ।८।

इति श्रीयुगलानन्यशरन

अष्टक समाप्तम् ॥